B.M.A. College Baheri Darbhanga (L.N.M.U)
B.A.(Hons) Part - I Paper - II Economics

05 2020

Dr. S.K. Singh
Deptt. of Economics

भारत में सहकारी कृषि का विकास

(DEVELOPMENT OF CO-OPERATIVE FARMING IN INDIA)

भारत में सहकारी कृषि की विचारधारा कोई नवीन नहीं है। इस बात के प्रमाण हैं, कि भारत में सहकारी कृषि आदि काल में भी रही है। इस सम्बंध में ऋग्वेद में भी उल्लेख मिलता है। बुद्ध के समय में सहकारी कृषि की भावना पायी जाती थी, लेकिन तदुपरान्त इस भावना में कमी होती चली गई।

बीसवीं शताब्दी में आकर एक बार फिर सहकारी कृषि पर जोर दिया जाने लगा। 1942 में एक बार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि "मेरी कल्पना है कि सहकारी कृषि से भूमि की शक्ल ही बदल जायेगी।" 1944 में इम्पीरियल कौउन्सिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च के सलाहकार बोर्ड ने भी सहकारी कृषि का सुझाव दिया था। इस वर्ष कि बम्बई योजना जो कि आठ उद्योगपतियों द्वारा बनायी गयी थी उसमें भी सहकारी कृषि का उल्लेख था। 1945 में सहकारी योजना समिति ने सुझाव दिया था कि राज्य में सहकारी कृषि का परीक्षण किया जाए। 1947 में कृषि सुधार समिति ने सुझाव दिया था कि छोटे भूखण्डों को सहकारी कृषि व्यवस्था में शामिल कर लेना चाहिए। इस सम्बंध में उत्तर प्रदेश ने पहल कि और 1950-51 तक यहाँ 45 समितियाँ स्थापित हो गयी थी। योजना काल में सहकारी कृषि पर विशेष जोर दिया गया है। जिसके फलस्वरूप 1955-56 के अन्त तक 1,000 सहकारी कृषि समितियाँ स्थापित हो गयी जिनकी संख्या द्वितीय योजना के अंत में 6325 व तृतीय योजना के अन्त में 8,354 हो गयी, लेकिन इसके बाद सहकारी कृषि समितियों की संख्या में प्रगति बहुत ही धीमी रही। इस समय लगभग 5.28 लाख सहकारी कृषि समितियाँ कार्य कर रही है जिसके पास 5.7 लाख हेक्टेअर भूमि है।

डा० राधाकृष्णन ने अपने लेख में लिखा है, कि 'विश्व में अब तक के अनुभव को देखते हुए व्यापक रूप से कृषक को मताधिकार मिलने की स्थिति में सर्वव्यापी संयुक्त खेती कि स्थापना लगभग असम्भव उपयुक्त है।

तटस्था वक्र विश्लेषण की श्रेष्ठता.

Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

(SUPERIORITY OF INDIFFERENCE CURVE ANALYSIS)

मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण व तटस्था वक्र विश्लेषण में कोई बहुत समानताएँ अवश्य है, फिर भी मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण से तटस्था वक्र विश्लेषण अनेक बातों में श्रेष्ठ है। इस विश्लेषण की श्रेष्ठता को इस प्रकार बताया गया है:

1. मापन की श्रेष्ठता (Superiority of measurement) मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण संख्यात्मक माप पर आधारित है जो गलत है। तटस्था वक्र विश्लेषण क्रमागत माप (ordinal measurement) पर आधारित है।

2. अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित नहीं (Not based on unreal assumptions) तटस्था वक्र विश्लेषण अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित नहीं है, जबकी मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है; जैसे - (i) वस्तुओं का स्वतंत्र होना, तथा (ii) मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता का समान होना, आदि।

3. आय प्रभाव व प्रतिस्थापन प्रभाव की स्पष्ट व्याख्या (Explanation of income effect and Substitution effect) मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण में प्रतिस्थापन प्रभाव का कोई उल्लेख नहीं है, जबकी तटस्था वक्र विश्लेषण में आय प्रभाव व प्रतिस्थापन प्रभाव की अलग-अलग स्पष्ट व्याख्या की गई है।

4. मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता को स्थिर माने बिना उपभोक्ता की बचत की व्याख्या - प्रो० मार्शल ने उपभोक्ता की बचत की व्याख्या मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता को स्थिर मानकर की है। तटस्था वक्र विश्लेषण में उपयोगिता को संख्यात्मक माप किये बिना तथा मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता को स्थिर माने बिना ही उपभोक्ता की बचत की व्याख्या की गई है।

5. गिफिन के विरोधाभास की व्याख्या (Explanation of Giffen's paradox) गिफिन वस्तुओं में मांग के नियम लागू नहीं होता है अर्थात वहां कीमत घटने से मांग बढ़ती नहीं है इस बात कि व्याख्या उपयोगिता विश्लेषण नहीं कर पाया, क्योंकि वहां कीमत प्रभाव = प्रतिस्थापन प्रभाव होता है लेकिन तटस्था वक्र विश्लेषण में आय प्रभाव कि व्याख्या की गई है।